

गए तो क्या कारण है कि जम्मू और काश्मीर जैसे जो सामरिक महत्व के स्थान हैं इतनी इम्पॉर्टेंट जगह के ऊपर आज तक भी कोई डाइरेक्ट कनेक्शन नहीं हो सका ? इतनी देर जो हो रही है उस का क्या कारण है और कब तक टारगेट आप देंगे कि इस टाइम तक यह हो जायगा ।

श्री इ० कु० गुजराल : जनाबअला , यह आनरेबल मॅम्बर ने ठीक फरमाया कि जम्मू कश्मीर के साथ माइक्रो वेव सिस्टम जल्दी हो जाना चाहिये था लेकिन कुछ हालात की वजह से लॅट हो गया । मैं यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि अगले दो महीने के अन्दर यह हो जायगा ।

श्री यशपाल सिंह : यहां बोर्डर के संबंध में जब हम सवाल करते हैं या कालिंग ग्रंटेन्शन नोटिस देते हैं तो सरकार बार बार कहती है कि इन्फार्मेशन नहीं आई जब कि चाइना के 65 रेडियो वहां लगे हुए काम कर रहे हैं जो कि माइक्रोफोन के अन्दर हर वक्त हमारे खिलाफ जहर उगल रहे हैं और हम अपने देश में भी नहीं कर सके कि नागा हिल के बारे में या मिजो विद्रोहियों के बारे में सवाल पूछे जायें तो उन का उत्तर तक नहीं मिलता । तो मैं यह पूछना चाहता हूँ कि यह कब तक हो जायगा ?

श्री इ० कु० गुजराल : जहां तक बार्डर का ताल्लुक है शिलांग के साथ कलकत्ते का माइक्रोवेव चालू हो चुका है और वह काम कर रहा है । आसाम के बाकी शहरों के साथ भी कर रहे हैं । जोरहाट के साथ हो चुका है । बाकी जितने शहर हैं अगले साल के जून, जुलाई तक सोघे उन से रिश्ता कलकत्ते तक जुड़ जायगा । मैं आनरेबल मॅम्बर को यह यकीन दिलाना चाहता हूँ कि गवर्नमेंट को इस बात का पूरा एहसास है कि बोर्डर एरियाज के साथ सेंटर का पूरा रिश्ता सोघा रहना चाहिए और इसलिये माइक्रोवेव सिस्टम जो किया तो उस की सब से पहले प्रायरिटी हमने जम्मू और काश्मीर को दी ।

Shri S. C. Samanta: May I know whether auto-transmitter system of pre-punching tapes has been introduced in the strategic areas of Assam, Jammu and Kashmir and other border areas and, if so, what improvement is contemplated during the Fourth Five Year Plan?

Shri I. K. Gujral: If I have understood the hon. Member rightly, he has asked if we have introduced microwave system in Assam and in Jammu and Kashmir. In reply to the main Question, I have said that Calcutta is already linked since last year by microwave with Shillong and also with Jorhat. Other stations are being linked up with Jammu and Kashmir. Work is almost complete and, as I have said, in the very near future it will be through.

Shri Liladhar Kotoki: May I know from the hon. Minister whether it is not a fact that the trunk telephone connection between Delhi and Gauhati in Assam and other places frequently breaks down? Even this morning, the line is out of order. Will he kindly enquire into it?

Shri I. K. Gujral: It will be enquired into.

Mr. Speaker: Next Question.

I.T.I. Ltd., Bangalore

+
*1386. **Shri George Fernandes:**
Shri Madhu Limaye:
Shri J. H. Patel:

Will the Minister of **Communications** be pleased to state:

(a) the cost of a telephone manufactured at the Indian Telephone Industries and whether this cost compares favourably with that of foreign manufactured telephone;

(b) whether there has been any export market for Indian manufactured telephones; and

(c) whether a new type of telephone—far superior in performance

and less costly than those known so far—has been designed by the I.T.I.?

The Minister of State in the Departments of Parliamentary Affairs and Communications (Shri L. K. Gujral):

(a) The Indian Telephone Industries Limited manufactures a variety of telephone instruments. The price of a typical automatic telephone instrument is Rs. 112 and this compares favourably with the price of foreign-manufactured telephones.

(b) Yes, Sir.

(c) No, Sir. But a new type of receiver having superior performance and costing less than the existing receiver has been designed by the Indian Telephone Industries Limited for use with the existing telephones.

श्री जार्ज फरनेंजी : जब इस मुल्क में जितने टेलीफोन की आवश्यकता है वह पूरे नहीं हो रहे हैं, जैसे कि बम्बई शहर में तो इस वक्त करीब 30 हजार लोगों की वेटिंग लिस्ट है, तब सरकार क्यों यह उचित समझती है कि हिन्दुस्तान में बने हुए टेलीफोन का निर्यात बढ़ा दिया जाये ?

श्री इ० कु० गुजराल : मेरे खयाल में माननीय सदस्य ने यह पूछा है कि बम्बई में वेटिंग लिस्ट बहुत लम्बी है और उसे हम पूरा क्यों नहीं कर सकते ।

श्री जार्ज फरनेंजी : मेरा प्रश्न यह है कि सरकार यह निर्यात तब कर रही है जब देश में ही टेलीफोनों की कमी है और बम्बई शहर में ही 30 हजार लोगों की वेटिंग लिस्ट है ? ऐसा क्यों हो रहा है ?

श्री इ० कु० गुजराल : इन बातों का आपस में कोई सम्बन्ध नहीं है कि बम्बई में या दिल्ली में या सारे देश में कितने टेलीफोन लगाए जायें । यह उसी हिसाब से लगाए जाते हैं कि प्लैन में कितना रुपया इस महकमे को दिया जाता है । जैसा मैं ने बजट के वक्त कहा था जितना रुपया दिया गया है वह बहुत कम है हमारी जरूरत के हिसाब से । जहां तक

एक्सपोर्ट का ताल्लुक है, इस के मुताल्लिक इंडियन टेलीफोन इंडस्ट्रीज में काफी मैनु-फैक्चरिंग कैपैसिटी है । अगर हम और रुपया लगायें तो हम और भी टेलीफोन देश में दे सकते हैं । एक्सपोर्ट के मुताल्लिक जो आनरेबल मੈम्बर ने पूछा है, उस की इस वक्त यह पोजीशन है कि हम जितना सामान बाहर भेज सकें वह हमारे देश के ित में होगा फारेन एक्सचेंज की दृष्टि से ।

श्री जार्ज फरनेंजी : इसी प्रश्न को दोहरा कर मैं दूसरा प्रश्न पूछना चाहता हूँ । यह बात मानी हुई है कि इस वक्त हमारे यहां टेलीफोन की बहुत कमी है । फिर भी हमारे मंत्री महोदय कहते हैं कि हम निर्यात तो करना ही चाहेंगे । मैं जानना चाहता हूँ कि आई० टी० आई० की जो कैपैसिटी है उस को बढ़ा कर क्या सरकार एक और टेलीफोन बनाने वाला कारखाना खोल कर देश के लोगों की टेलीफोन की परेशानी को दूर करेगी ?

श्री इ० कु० गुजराल : जहां तक इंडियन टेलीफोन इंडस्ट्रीज की कैपैसिटी का ताल्लुक है, वह तो पूरी इस्तेमाल हो रही है । जहां तक देश में दूसरी फैक्टरी खोलने की चन्द लोगों की मांग का ताल्लुक है जैसा मैं ने बतलाया इस वक्त हमारे देश में जरूरत के हिसाब से कोई 60 लाख टेलीफोन लगने चाहियें लेकिन लगायेंगे हम चौथी प्लैन में सिर्फ साढ़े 6 लाख । इस की वजह सिर्फ यह है कि प्लैन में जितना रुपया इस महकमे को दिया गया है वह बहुत कम है । अगर इंटरनल रिसेंसिज में इस महकमे को प्रायोरिटी दी जाये, हमें फारेन एक्सचेंज नहीं चाहिये, और अगर पार्लियामेंट इस महकमे को रुपया देने को तैयार हो जाय तो मैं यह वादा कर सकता हूँ कि जितनी इस देश की मांग है वह पूरी कर दी जायेगी ।

श्री मधु लिमये : अब तक मैं टेलीफोन मंत्रियों को चिट्ठियां लिख कर थक गया हूँ । जब कभी टेलीफोन उठाओ, घंटी बजती है,

टेलीफोन उठाते ही वह बन्द हो जाती है। मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूँ कि यह खराबी जो मशीन बनाई जाती है उस में है या जो लाइन आप लगाते हैं उस में है या एक्सचेंज में जो सारा सामान है उस में है? क्या कभी आप ने इस की जांच की है?

श्री नाथ पाई : टैपिंग भी होती है।

श्री मधु लिमये : वह दूसरी बात है, और गृह मंत्रालय का मामला है। मैं टैपिंग के बारे में इस वक्त नहीं पूछ रहा हूँ। मैं जानना चाहता हूँ कि जो मैं ने तीन चीजें बतलाई हैं उन में से कौन खराब है या तीनों खराब हैं?

संसद्-कार्य तथा संचार मन्त्री (डा० राम सुभग सिंह) : एक बिट्टी मुझे मिली थी। उस के बाद उस की जांच की गई और उस से उन को काफी मन्तोष हुआ। आज मुझे आश्चर्य हुआ कि उस को देखने के बाद उन के मुँह से निकलती है ऐसी बात। वह एक महीने की बात है। उस के बाद उन्होंने आज बतलाया कि उन का टेलीफोन नहीं चल रहा है। लेकिन अगर आज भी कोई दिक्कत है तो सारी चीजों को देख कर ठीक करने की कोशिश की जाएगी।

श्री मधु लिमये : मेरे प्रश्न का जवाब नहीं आया। मैंने अपने बारे में जो कहा वह तो एक पृष्ठभूमि थी। सवाल यह है कि मशीनों में खराबी है या लाइन जो लगाते हैं उस में खराबी है या जो एक्सचेंज है उस में कोई खराबी है?

श्री इ० कु० गुजराल : यह सवाल खराबी का नहीं है। मैंने बजट के वक्त अर्ज किया था कि यहां जितने टेलीफोन लगे हुए हैं उन के मुकाबले में मांगें बहुत ज्यादा है। इसलिये जितनी काल्स एक टेलीफोन से की जाती हैं, वह उस के हिसाब से बहुत ज्यादा हैं जितना यहां का एक्सचेंज बर्दाश्त कर सकता है। नतीजा यह निकलता है, जैसे कि मिसाल दूँ, आप मुझे माफ करें, कि अगर 16 फीट चौड़ी

सड़क में जहां दो मोटरें चल सकती हैं, प्रायः 6 मोटरें छोड़ दें तो सारी गड़बड़ी हो जायेगी।

श्री महाराज सिंह भारती: मंत्री महोदय के कथनानुसार जितने टेलीफोन इस देश में मांगे जा रहे हैं उन सब को कनेक्शन देने की क्षमता सरकार में है और इतना सामान आप तैयार करते हैं . . .

श्री इ० कु० गुजराल : कर सकते हैं।

श्री महाराज सिंह भारती: कर सकते हैं, और उस से मंत्रालय को फायदा हो रहा है, हालांकि डाक तार विभाग आज घांठे में चल रहा है। आप के टेलीफोन में इतनी आमदनी हो रही है जिस के लिये मैं कह सकता हूँ कि जैसे टेक्स से आप को आमदनी होती है उसी तरह से इस में होती है। और इसकी जिम्मेदारी देश के बड़े आदमियों पर पड़ती है। वह मांगते हैं और आप में देने की ताकत भी है। करोड़ों रुपये आप इस से आमदनी बसूल कर सकते हैं, और यहां बहुत सी प्रान्टों के ऊपर बिना बहस किए हुए आप ले भी सकते हैं, तब फिर क्या बजह है कि आप ने अपने लिये रुपया लेने की कोशिश नहीं की?

श्री इ० कु० गुजराल : आनरेबल न म्बर ने यह ठीक कहा कि हम सारा सामान बना सकते हैं, यह भी ठीक है कि लोगों की मांग है, यह भी ठीक है कि हमें टेलीफोन कनेक्शन से जितना रिटर्न होता है उतना शायद किसी और इंडस्ट्री में नहीं होता, यह सारी दुनिया का माना हुआ उसूल है, लेकिन मुश्किल यह है कि जब प्लान बनाई जाती है उस में पार्लियामेंट एक खास मद रखती है कि फलां मद के लिये इतना रुपया हम देते हैं। उतने रुपये के अन्दर हमें गुजारा करना पड़ता है। अगर वह रुपया आप बढ़ा दें तो — मैं वादा करता हूँ कि हम आप की सब जरूरतों को पूरा कर देंगे।

Shri K. Lakkappa: May I know whether Government have constituted any committee to investigate into the

production of defective phones manufactured in the ITI and and if so, why the committee has not examined the matter and if not, why the committee has not been constituted?

Shri I. K. Gujral: I do not know what for the hon. Member wishes a committee to be appointed.

Shri K. Lakkappa: The production in the ITI is defective and they are supplying defective materials. May I know whether Government are going to constitute a committee to look into the matter?

Shri I. K. Gujral: I beg to refute the allegation of the hon. Member. The ITI is supplying goods right upto the standards; in fact, it is not only that but we are having an increasing export market, and in every export market we are effectively and successfully competing with all the developed countries in the matter of telecommunications.

Shri M. E. Krishna: Which are the countries which are purchasing the Indian made telephones? May I know whether any modifications have been carried out on the advice given by those countries which are already purchasing our telephones?

Shri I. K. Gujral: There is a long list of the countries. If the hon. Member wishes, I can send him the list. For instance, we have recently supplied to Kuwait and to the Middle East countries. We are also now trying in Malaysia and also trying to tender in Iraq. It is a long list and it has already been given in the annual report of the ITI which I have placed on the Table of the House.

So far as the modifications are concerned, no such suggestion has been made to us for modification of our instrument. On the contrary, the new receiving instrument that we have evolved with our own research is now receiving more attention and it is being patented abroad.

Shri S. K. Taparia: The importance of a telephone instrument lies

in what we can hear through it over long distance and also short distance rather than the visibility and the beauty of it. One of the latest models of the telephone has been called Priyadarshini, which means 'Good to look at'. May I know whether it has been named after the Prime Minister?

Mr. Speaker: This question need not be answered.

Shri P. K. Deo: He should reply to it.

Shri Nath Pai: He must, you will agree with me, be a very lucky man who can get a number he wants at the first attempt or whose call is not interrupted. Apart from overloading on the line, bad equipment etc., what is the contribution of Shri Chavan's Ministry in interrupting and tapping the lines?

The Minister of Home Affairs (Shri Y. B. Chavan): None at all.

श्री तुलशीदास जाधव : टेनीफोन एक्सचेंज में जो लोग काम करते हैं वे डील और मुनने जैसे बोलें इस तरह की व्यवस्था करना कोई कठिन काम नहीं है। यदि आप वहां पर स्त्रियों को ज्यादा काम दें और पुरुषों को वहां से हटा कर हार्ड काम दें तो अच्छा होगा। मैं जानना चाहता हूँ कि क्या आप ऐसा कोई इंतजाम करने जा रहे हैं ?

Mr. Speaker: Unfortunately, the question is only about the cost of production in ITI. From that we are now going to the exchanges, the CBI interfering or Shri Chavan's Ministry interfering and so on. All this has absolutely no relevance. We shall better go to the next question.

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय

1387. श्री सिद्धेश्वर प्रसाद : क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या 3 फरवरी, 1966 को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई घटनाओं